भारत-चीन-नेपाल त्रिकोण

लेखक- सुजीव शाक्य (अध्यक्ष, नेपाल आर्थिक मंच)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

28 सितम्बर, 2019

"नेपाल को चीन से तब तक कुछ हासिल नहीं होगा जब तक वह चीन तक अपनी पहुँच को विकास की दूरगामी दृष्टिकोण के माध्यम से पुनः जांच नहीं करता।"

इस सप्ताह के शुरू में, 24 सितंबर को, दो दिवसीय कार्यक्रम में सत्तारूढ़ नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एनसीपी) के शीर्ष अधिकारियों ने भाग लिया, जिसमें नेपाल के प्रधानमंत्री भी शामिल थे, एनसीपी ने कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस कार्यक्रम में हुए समझौते के अलावा, 'शी जिनपिंग के बारे में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की राय, नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना के बीच वैचारिक चर्चा", 2013 में राष्ट्रपति पद संभालने के बाद से अक्टूबर में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की यात्रा की तैयारी से संबंधित था। इससे पहले 1996 में 23 साल पहले चीनी राष्ट्रपति नेपाल की यात्रा पर गए थे।

उत्तर की ओर

अगस्त 2014 में, जब भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नेपाल गए थे, तो पूरा काठमांडू उनके स्वागत में शामिल हुआ था। एक दशक से अधिक समय के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा इस तरह के ऐतिहासिक यात्रा को अंजाम दिया गया था। ऐसा लगने लगा कि जैसे भारत-नेपाल संबंध में महत्त्वपूर्ण बदलाव आने वाले हैं। एक साल से भी कम समय के अन्दर ही, जब नेपाल में एक बड़ा भूकंप आया, तो भारत ने नेपाल को काफी मदद और राहत सामग्री के साथ अपनी प्रतिक्रिया भेजी थी। भारत ने सभी को महसूस कराया कि संबंधों में बदलाव वास्तविक थे। लेकिन महीनों बाद, नेपाल के संविधान से असंतुष्ट भारत ने दोनों देशों के बीच संबंधों में गतिरोध डाल दिया जिसने श्री मोदी और भारत के बारे में सभी की धारणा को हमेशा के लिए बदल दिया।

यह एक ऐसा कार्य था, जिसने नेपाली युवाओं की एक पूरी पीढ़ी को अलग-थलग कर दिया और नेपाली नेताओं ने चीन तक पहुंचने के लिए राष्ट्रवाद का खेल खेलना शुरू किया। भूकंप और नाकेबंदी के बाद चीनी दिलचस्पी बढ़ी। बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) की घोषणा के साथ, दोनों देशों के बीच आदान-प्रदान और बातचीत भी बढ़ने लगी। नेपाल द्वारा चीन के साथ समझौतों पर हस्ताक्षर करने का मतलब यह नहीं था कि उसने 'भारत के लिए दरवाजे बंद' कर दिए हैं, बल्कि यह था कि उसने अपनी उत्तरी सीमा के माध्यम से पारगमन और व्यापार के अवसरों से लाभ कमाना शुरू कर दिया है।

बाहर तक पहुँच में समस्याएं

1950 में राणा निरंकुशता समाप्त होने के बाद अपनी 70 साल की यात्रा में नेपाल ने अभी तक अपने द्विपक्षीय या बहुपक्षीय संबंधों का लाभ नहीं उठाया है। शाह राजाओं के काल से जो एक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य के वर्तमान स्वरूप में 2006 तक स्वयं शासन करते थे, जिसके कारण बाहरी दुनिया के साथ नेपाल की भागीदारी नाटकीय, भाषणों और छोटी कार्रवाई से अधिक संबंधित रही है।

2015 के भूकंप के बाद, चीन, भारत और अन्य देशों ने पुनर्निर्माण के लिए लगभग 4 बिलियन डॉलर का वादा किया। भारत ने अधिक धनराशि देने का वादा किया था, लेकिन नेपाल ने इन निधियों का उपयोग करने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। जहाँ एक तरफ नेपाल

निवेश की मांग करने और साझेदारी मॉडल में शामिल होने के संदर्भ में हमेशा पीछे रहा है वहीं दूसरी तरफ बांग्लादेश चीन और भारत दोनों के साथ सफलतापूर्वक संबंध बनाने में सक्षम रहा है।

हिंदू धर्म में अंतर्निहित एक मजबूत पितृसत्तात्मक और सामंती संस्कृति के साथ, रीति-रिवाज नेपाली जीवन पर हावी है। बहून (ब्राह्मण) समुदाय के लोग राजनीति और नौकरशाही में नेतृत्व के बड़े पैमाने पर हावी होने के साथ, गहरे मुद्दों की समझ के बजाय रीति-रिवाजों पर अधिक जोर देते हैं। इसलिए चुनावी दृष्टिकोण से राष्ट्रवाद को जीवित रखने के अलावा आगामी यात्रा के बारे में बहुत कम उम्मीद है: सामान्य तौर पर भारत विरोधी बयान देने के बारे में।

नेपाली राजनीति

विश्लेषकों द्वारा नेपाली कम्युनिस्ट के संदर्भ में जो तथ्य नजरअंदाज किए जाते हैं वह यह है कि नेपाल में साम्यवाद कलकत्ता से होकर आया था, न कि सीधा चीन से। इसलिए, जो हम नेपाल में देखते हैं, वह चीनी साम्यवाद के बजाय पश्चिम बंगाल का संस्करण है। सबसे पहले, पश्चिम बंगाल में कम्युनिस्ट आंदोलन कई गुटों में रहा जो एक एकल और एकीकृत पार्टी होने के बजाय कई गुटों में बंटता रहा। एक समय में, लोगों ने इस बात की गिनती कर ली थी कि नेपाल में कितने कम्युनिस्ट दल भूमिगत है और कितने नहीं है।

दूसरा, भारत और नेपाल दोनों में कम्युनिस्ट आंदोलन बयानबाजी और पाखंड को बेचने के लिए किया गया है। यह कड़ी मेहनत चीनी सामाजिक मॉडल के विपरीत और उद्यमी प्रयासों को प्रोत्साहित करने से संबंधित है।

तीसरा, नेपाली कम्युनिस्ट, विशेष रूप से पूर्व विद्रोही, अभी भी माओ और माओवादी विचारधारा के बारे में बात करते हैं। चीन में, माओ एक ऐसा शब्द है जिसे सबसे अधिक टाला जाता है और वर्तमान प्रमुख नेतृत्व के लिए यह एक शब्दजाल है। वर्ष के अंत में चीन जब पार्टी के भीतर एक समूह बहुमत से एक मुद्दे पर निर्णय लेता है, तो विरोधी विचारों वाले लोग निर्णय को स्वीकार करते हैं और भविष्य में उन्हें चुनौती नहीं देते हैं। आप किसी मुद्दे पर बहस कर सकते हैं, लेकिन निर्णय होने के बाद आपको उसका पालन करना होगा। नेपाली साम्यवाद किसी व्यक्ति के नेतृत्व को स्वीकार करने के बजाय निरंतर घुसपैठ और जागीर बनाने के बारे में रहा है।

नेपाली कम्युनिस्ट का हालिया उदय भारत की कम्युनिस्ट पार्टियों की सहानुभूति और समर्थन के कारण हुआ है जो संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन का हिस्सा थे। माओवादियों ने, भूमिगत रहते हुए, मौन समर्थन प्राप्त किया। अब भारत में साम्यवादी दलों के साथ मतभेद होने पर, नेपाली कम्युनिस्ट नेता अन्य विकल्प की तलाश में हैं। राकांपा के सह-अध्यक्ष पुष्प कमल दहल के साथ प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली, माधव कुमार नेपाल और झाला नाथ खनाल जैसे अन्य नेता जो पहले भारतीय समर्थन के साथ प्रधानमंत्री बने, चीन में विकल्प तलाशने की कोशिश कर रहे हैं।

जहाँ एक तरफ नेपाल में चीनी जुड़ाव ने BRI चरण को बढ़ा दिया है और कई नीतियों को फिर से लागू करने का विचार किया जा रहा है वहीं दूसरी वे लोग जो चीनी निवेश के साथ कुछ परियोजनाओं का समर्थन कर रहे थे। वे अब सरकार से खुश नहीं हैं क्योंकि वे अब उसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं जिसे अन्य निवेशकों द्वारा किया जा रहा है। नेपाल में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कम है और सरकार ने जिस तरह से काम किया है वह वास्तव में बड़े चीनी निवेशकों को नेपाल को गंभीरता से देखने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता है।

नेपाल में चीनी व्यवसायों में वृद्धि ज्यादातर निचले स्तर के उदाहरण बने हुए हैं, जो होटल और रेस्तरां का संचालन करते हैं। जब तक नेपाल में विकास की दूरगामी दृष्टि, निवेशक-हितैषी नीतियों को लागू करने की इच्छा और दक्षता की दिशा में ठोस कदम उठाने की पहल नहीं होती, तब तक राष्ट्रपति शी की यात्रा एक बार फिर से वही 'मित्रवत पड़ोसी' की यात्रा बन कर रह जाएगी, जो किसी के घर जाने पर कुछ उपहार साथ ले जाता है और फिर चला जाता है।

भारत-नेपाल संबंध

परिचय

- भारत और नेपाल के सम्बन्ध अनादि काल से हैं। दोनों पड़ोसी हैं, दोनों की धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषायी एवं ऐतिहासिक स्थिति में बहुत अधिक समानता है।
- नेपाल के वर्तमान प्रधानमंत्री के. पी. ओली नें प्रधानमंत्री पद संभालकर सबसे पहले भारत का दौरा किया। उनके इस दौरे से दोनों देशों के बीच सम्बन्ध और भी मजबूत हुए हैं।
- भारत-नेपाल संबंधों की शुरुआत वर्ष 1950 की मैत्री और शांति संधि के साथ हुई थी। यही संधि दोनों देशों के बीच व्यापारिक गठजोड़ को भी बढ़ाती रही। भारत-नेपाल के मध्य मधुर एवं सहयोगात्मक संबंध रहे हैं।
- नेपाल के राजनीतिक संक्रमण काल के दौरान भारत ने वृहद स्तर पर इसकी सहायता की। मोदी सरकार ने पिछले तीन साल में नेपाल सहित अन्य सभी सार्क देशों के साथ रिश्ते मजबूत करने के लिए कई महत्त्वपूर्ण प्रयास किये हैं।

हाल में हुए प्रमुख समझौते

- मोतिहारी-अमलेखगंज (नेपाल) पाइपलाइन
- हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और नेपाल के प्रधानमंत्री श्री के. पी. शर्मा ओली ने दक्षिण एशिया की पहली सीमा पार जाने वाली पेट्रोलियम उत्पादों की पाइपलाइन का वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये संयुक्त रूप से उद्घाटन किया।
- यह पाइपलाइन बिहार के मोतिहारी से नेपाल के अमलेखगंज को जोड़ती है।
- इस अवसर पर नेपाल के प्रधानमंत्री ओली ने महत्त्वपूर्ण संपर्क परियोजना के शीघ्र कार्यान्वयन पर प्रशंसा व्यक्त की। यह परियोजना निर्धारित समय सीमा से काफी पहले पूरी हो गई है।

मुख्य बिंदु

- 69 किलोमीटर लंबी मोतिहारी-अमलेखगंज पाइपलाइन नेपाल के लोगों को किफायती लागत पर स्वच्छ पेट्रोलियम उत्पाद उपलब्ध कराएगी।
- इस पाइपलाइन की क्षमता दो मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष है। उन्होंने प्रधानमंत्री ओली की उस घोषणा का स्वागत किया, जिसमें नेपाल में पेट्रोलियम उत्पादों के दाम में दो रुपये प्रति लीटर की कटौती करने की बात कही गई है।
- उन्होंने विश्वास जताया कि भारत और नेपाल के बीच द्विपक्षीय संबंधों का प्रगाढ़ होना जारी रहेगा तथा इनका अलग-अलग क्षेत्रों तक विस्तार होगा।

रक्सौल-काठमांडू रेलवे लाइन समझौता

- भारत और नेपाल ने 31 अगस्त 2018 को दोनों देशों के बीच रणनीतिक महत्व के रक्सौल-काठमांडु रेलमार्ग को विकसित करने के लिए सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। यह रेलमार्ग बिहार के रक्सौल शहर को नेपाल की राजधानी काठमांडु से जोड़ेगा।
- भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नेपाली प्रधानमंत्री के. पी. शर्मा ओली से द्विपक्षीय मुद्दों पर विचार-विमर्श करने के बाद इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये थे।
- हालांकि, इस रेल लाइन के लिए अप्रैल 2018 में ही करार किया गया था। तब नेपाल के पीएम भारत दौरे पर आए थे।

महत्व

- इस रेलवे लाइन से लोगों को आवाजाही में आसानी होगी और बड़ी मात्रा में वस्तुओं के परिवहन के लिए भी यह रेल लाइन उपयोगी सिद्ध होगी। इस रेलवे लाइन क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों व विकास को बढ़ावा मिलेगा।

मुख्य बिंदु

- यह समझौता रक्सौल (भारत) और काठमांडु (नेपाल) के बीच ब्रॉडगेज रेलवे लाइन के आरंभिक इंजीनियरिंग एवं यातायात सर्वेक्षण के लिए किया गया है।
- इस रेल लाइन के लिए सर्वेक्षण कार्य भारत की कंपनी कोंकण रेल कार्पोशन करेगा।
- इसके बाद प्रोजेक्ट के लिए फंडिंग और क्रियान्वयन योजना इत्यादि का प्रबंध किया जायेगा।
- इसके अलावा इन दो देशों के बीच तीन और रेलवे परियोजनाओं पर भी विचार किया जा रहा है। यह परियोजनाएं नौतनवां-भैरहवां, न्यू जलपाईगुड़ी-काकरभित्ता और नेपालगंज रोड-हैं।
- रक्सौल-काठमांडु रेलमार्ग से दोनों देशों के लोगों के बीच संपर्क बढ़ेगा और थोक में सामान की आवाजाही सरल हो सकेगी।

पृष्ठभूमि

- यह समझौता इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि दो साल पहले ही चीन ने तिब्बत से नेपाल के बीच रेलमार्ग स्थापित करने पर सहमति जतायी थी।
- इसके अलावा चीन ने नेपाल के साथ कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए तीन हाईवे का निर्माण करने का निर्णय किया है, इनका निर्माण वर्ष 2020 तक कर लिया जायेगा।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **भारत-नेपाल संबंध के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-**

   1. नेपाल का झुकाव चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव की ओर दिख रहा है।
   2. नेपाल ने भारत के साथ अपने संबंध को सही रखते हुए उत्तरी सीमा के माध्यम से व्यापार एवं अवसरों का लाभ कमाना शुरू कर दिया है।
   3. नेपाल व चीन दोनों में साम्यवाद रहा है, लेकिन नेपाल का जो साम्यवाद है वह चीन के बजाय पश्चिम बंगाल का संस्करण है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-से कथन सत्य हैं?

   (a) 1 और 2
   (b) 2 और 3
   (c) 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Consider the following statements regarding the India-Nepal relations.**

   1. Nepal's tiltation towards China's Belt and Road Initiative is visible.
   2. Nepal, has started to take benefits of trade and oppartunities through its northern boundary keeping its good relations with India.
   3. Communism prevailed both in Nepal and China. But Nepal's communism is a version of West Bengal's instead of China.

   Which of the above statements are correct?

   (a) 1 and 2 (b) 2 and 3
   (c) 1 and 3 (d) 1, 2 and 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: नेपाल-चीन संबंधों में नवीन बदलाव भारत के लिए क्या निहितार्थ रखते हैं? चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

What relevence do the recent changes in Nepal-China relations have for India. Discuss (250 Words)

नोट : 27 सितंबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (b) होगा।

Comi